खवा संखेज्जगुणा ॥ ३३३ ॥

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३३४ ॥

सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ ३३५ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ३३६ ॥

गुणगारो ओघसिध्दो, खइयसम्मत्तविरहिदसजोगीणमभावा ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ३३७ ॥

को गुणगारो ? तप्पाओग्गसंखेज्जरूवाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३३८ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

....

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३३३ ॥

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥ ३३४ ॥

सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, ये दोनों ही प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य ओर पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥ ३३५ ॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

सयोगिकेवली जिन संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥ ३३६ ॥

यहांपर गुणकार ओघ-कथित है, क्योंकि, क्षायिकसम्यक्त्वसे रहित सयोगिकेवली नहीं पाये जाते हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३३७ ॥

गुणकार क्या है ? अप्रमत्तसंयतोंके योग्य संख्यातरूप गुणकार है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३३८ ॥

गुणकार क्या है ? दो रूप गुणकार है ।

संजदासंजदा संखेज्जगुणा[1] ॥ ३३९ ॥

मणुसगदिं मोत्तूण अण्णत्थ खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणमभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[2] ॥ ३४० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥ ३४१ ॥

एदस्स अहिप्पाओ - जेण खइयसम्मत्तस्स एदेसु गुणट्ठाणेसु भेदो णत्थि, तेण णत्थि सम्मत्तप्पाबहुगं, एयपयत्तादो । एसो अत्थो एदेण परूविदो होदि ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा ॥ ३४२ ॥

कुदो ? तप्पाओग्गसंखेज्जपमाणत्तादो ।

....

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३३९ ॥

क्योंकि, मनुष्यगतिको छोडकर अन्य गतियोंमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंका अभाव है ।

क्षायिकसम्यगदृष्टियोंमें संयतासंयतोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३४० ॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसयंत ओर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यक्त्वका भेद नहीं है ॥ ३४१ ॥

इस सूत्र का अभिप्राय यह है कि इन असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चारों गुणस्थानोंमें क्षायिकसम्यक्त्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है , इसलिए उनमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उन सबमें क्षायिकसम्यक्त्वरूप एक पद ही विवक्षित है । यह अर्थ इस सूत्रके द्वारा प्ररूपित किया गया है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे कम हैं ॥ ३४२ ॥

क्योंकि , उनका तत्प्रायोग्य संख्यातरूप प्रमाण है ।

....

[1] ततः संयतासंयताः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

[2] असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

[3] क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु सर्वतः स्तोकाः अप्रमत्ताः स. सि. १, ८.

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[1] ॥ ३४३ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा[2] ॥ ३४४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[3] ॥ ३४५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठी-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे वेदगसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥ ३४६ ॥

एत्थ भेदसद्दो अप्पाबहुअपज्जाओ घेत्तव्वो, सद्दाणमणेयत्थत्तादो । वेदगसम्मत्तस्स भेदो अप्पाबहुअं णत्थि त्ति उत्तं होदि ।

....

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३४३ ॥

गुणकार क्या है ? दो रूप गुणकार है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३४४ ॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयतोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३४५ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें वेदकसम्यक्त्वका भेद नहीं है ॥ ३४६ ॥

यहांपर भेद शब्द अल्पबहुत्वका पर्यायवाचक ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, शब्दोंके अनेक अर्थ होते हैं । इस प्रकार इस सूत्र द्वारा यह अर्थ कहा गया है कि इन गुणस्थानोंमें वेदकसम्यक्त्वका भेद अर्थात् अल्पबहुत्व नहीं है ।

....

१ प्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

२ संयतासंयताः (अ-) संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

३ असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणा : । स. सि. १, ८.

उवसमसम्मादिट्ठीसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा[१] ॥ ३४७ ॥

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३४८ ॥

अप्पमत्तसंजदा अणुवसमा संखेज्जगुणा[२] ॥ ३४९ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[३] ॥ ३५० ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा[४] ॥ ३५१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[५] ॥ ३५२ ॥

....

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥ ३४७ ॥

उपशान्तवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥ ३४८ ॥

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंमें अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यात गुणित हैं ॥ ३४९ ॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३५० ॥

गुणकार क्या है ? दो रूप गुणकार है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३५१ ॥

गुणकार क्या है । पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयतोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३५२ ॥

....

१ औपशमिकसम्यग्दृष्टिनां सर्वतः स्तोकाश्चत्वार उपशमकाः । स. सि. १, ८.

२ अप्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८. ३ प्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स.सि.१,८.

४ संयतासंयताः (अ-) संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

५ असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे उवसमसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥३५३॥

सुगममेदं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-मिच्छादिट्ठीणं णत्थि अप्पाबहुअं[1] ॥३५४॥

कुदो? एगपदत्तादो ।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं[2] ॥३५५॥

जधा ओघम्हि अप्पाबहुगं परूविदं तधा एत्थ परूवेदव्वं, सण्णित्तं पडि उहयत्थ भेदाभावा । विसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

....

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यक्त्व अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५३॥

यह सूत्र सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५४॥

क्योंकि, तीनों प्रकारके जीवोंके एक गुणस्थानरूप ही पद है ।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

संज्ञिमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक जीवोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३५५॥

जिस प्रकार ओघमें इन गुणस्थानोंका अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहां पर भी प्ररूपण करना चाहिए, क्योंकि, संज्ञित्वकी अपेक्षा दोनों स्थानोंपर कोई भेद नहीं है । अब संज्ञियोंमें संभव विशेषके प्रतिपादनके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं-

....

१ शेषाणां नास्त्यल्पबहुत्वम्, विपक्षे एकैकगुणस्थानग्रहणात् । स.सि. १,८.

२ संज्ञानुवादेन संज्ञिनां चक्षुर्दर्शनिवत् । स.सि. १,८.

णवरि मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३५६॥

ओघमिदि वुत्ते अणंतगुणत्तं पत्तं, तण्णिरायरणट्ठं असंखेज्जगुणा इदि उत्तं । गुणगारो पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ।

असण्णीसु णत्थि अप्पाबहुअं[1] ॥३५७॥

कुदो? एगपदत्तादो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसु अध्दासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा[2] ॥३५८॥

चउवण्णपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३५९॥

सुगममेदं ।

विशेषता यह है कि संज्ञियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३५६॥

उपयुक्त सूत्रमें 'ओघ' इस पदके कह देने पर असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अनन्तगुणितता प्राप्त होती थी, उसके निराकरणके लिए इस सूत्रमें 'असंख्यातगुणित है' ऐसा पद कहा है । यहां पर गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है, जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण है ।

असंज्ञी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५७॥

क्योंकि, उनमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ही होता है ।

इस प्रकार संज्ञिमार्गणा समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३५८॥

क्योंकि, उनका प्रमाण चौपन है ।

आहारकोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३५९॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

[1] असंज्ञिनां नास्त्यल्पबहुत्वम् । स.सि. १,८.

[2] आहारानुवादेन आहारकाणां काययोगिवत् । स.सि. १,८.

खवा संखेज्जगुणा ॥३६०॥

अट्ठुत्तरसदपमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३६१॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेव ॥३६२॥

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥३६३॥

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥३६४॥

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥३६५॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥३६६॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३६७॥

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥३६८॥

आहारकोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६०॥

क्योंकि, उनका प्रमाण एक सौ आठ है ।

आहारकोंमें क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३६१॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारकोंमें सयोगिकेवली जिन प्रवेशकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३६२॥

सयोगिकेवली जिन संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥३६३॥

सयोगिकेवली जिनोंसे अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६४॥

अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६५॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

आहारकोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३६६॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

आहारकोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३६७॥

सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६८॥

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३६९॥

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥३७०॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥३७१॥

एवं तिसु अद्धासु ॥३७२॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥३७३॥

खवा संखेज्जगुणा ॥३७४॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली[1] ॥३७५॥

कुदो? सट्ठिपमाणत्तादो ।

अजोगिकेवली संखेज्जगुणा[2] ॥३७६॥

कुदो? दुरूऊणछस्सदपमाणत्तादो ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३६९॥

असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥३७०॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

आहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३७१॥

इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३७२॥

उक्त गुणस्थानोंमें उपशामक जीव सबसे कम हैं ॥३७३॥

उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३७४॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

अनाहारकोंमें सयोगिकेवली जिन सबसे कम हैं ॥३७५॥

क्योंकि, उनका प्रमाण साठ है ।

अनाहारकोंमें अयोगिकेवली जिन संख्यातगुणित हैं ॥३७६॥

क्योंकि, उनका प्रमाण दो कम छह सौ अर्थात् पांच सौ अठ्यानवे (५९८) है ।

---

[1] अनाहारकाणां सर्वतः स्तोकाः सयोगकेवलिनः । स.सि. १,८. [2] अयोगकेवलिनः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[1] ॥३७७॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[2] ॥३७८॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा[3] ॥३७९॥

को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥३८०॥

कुदो? संखेज्जजीवपमाणत्तादो ।

....

अनाहारकोंमें अयोगिकेवली जिनोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३७७॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

अनाहारकोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३७८॥

गुणकार क्या है । आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥३७९॥

गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणित, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणित राशि गुणकार है, जो सर्व जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥३८०॥

क्योंकि, अनाहारक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण संख्यात है ।

....

[1] सासादनसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

[2] असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

[3] मिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणाः । स.सि. १,८.

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥३८१॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३८२॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमस्स पढमवग्गमूलाणि ।

(एवं आहारमग्गणा समत्ता ।)

एवमप्पाबहुगाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥३८१॥

गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३८२॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई)

इस प्रकार अल्पबहुत्वानुगम नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।